प्रश्न 9—क्षेत्रवादी मनोविज्ञान क्या है ? मनोविज्ञान के इतिहास में उसके स्थान की परीक्षा कीजिये ।

What is Topological Psychology ? Examine its place in the history of Psychology.

उत्तर—कुर्ट लेवीन (Kurt Levin) गेस्टाल्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित था और उसने जो मनोवैज्ञानिक विचार प्रकट किये वे एक भिन्न विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते थे जिसे कि क्षेत्र-सिद्धान्त कहा जाता है । क्षेत्र-सिद्धान्त का आधार भौतिकी (Physics) तथा गणित है । लेवीन इन दोनों विषयों पर अधिकार रखता था । इसके अतिरिक्त उसने प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों वर्दाइमर (Wertheimer) और कोहलर (Kohler) से मनोविज्ञान की शिक्षा प्राप्त की । उसने बर्लिन यूनिवर्सिटी में इन दोनों गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के साथ कार्य किया तथा बाद में सन् 1933 में वह अमेरिका चला गया और उसने वहीं की नागरिकता ले ली । यहाँ पर उसने आयोवा राज्य यूनिवर्सिटी में लगभग दस वर्ष तक बाल मनोविज्ञान (Child Psychology) के प्रोफेसर के पद पर कार्य किया । उसने बाल मनोविज्ञान का गहन अध्ययन किया और बहुत से प्रयोग किये । उसका क्षेत्र-सिद्धान्त इन्हीं प्रयोगों एवं अध्ययन का परिणाम है और उसने बाल मनोविज्ञान के आधार पर इसकी व्याख्या की ।

क्षेत्र-सिद्धान्त क्या है—लेवीन ने क्षेत्र-सिद्धान्त के विषय में सर्वप्रथम सन् 1940 में बतलाया । इस सिद्धान्त की उपयोगिता व्यवहार, संवेग तथा व्यक्तित्व की व्याख्या के लिये सिद्ध हो चुकी है । क्षेत्र-सिद्धान्त के अनुसार व्यवहार का निरूपण उन विभिन्न तथ्यों के आधार पर होना चाहिये जो कि किसी विशेष परिस्थिति में

Scanned with CamScanner

एक साथ पाये जाते हैं। ये तथ्य जो कि एक साथ ही एक स्थान पर पाये जाते हैं, व्यवहार क्षेत्र को गत्यात्मक (Dynamic) बना देते हैं। कारण यह है कि क्षेत्र की विभिन्न वस्तुयें एक दूसरे पर अपना-अपना प्रभाव डालती हैं। इस प्रकार क्षेत्र-सिद्धान्त में व्यवहार केवल वर्तमान (Present) पर निर्भर होता है और अतीत और भविष्य पर निर्भर नहीं होता।

साहचर्य सिद्धान्त का विरोध—यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि क्षेत्र-सिद्धान्त साहचर्य सिद्धान्त (Principle of Association) का विरोध करता है। साहचर्यवाद में अतीत के अनुभवों पर बहुत बल दिया जाता है जबकि क्षेत्र-सिद्धान्त में वर्तमान पर। इसी प्रकार यह हेतु विज्ञान का विरोधी है जो कि भविष्य पर अधिक बल देता है। फिर भी क्षेत्र-सिद्धान्त का प्रतिपादन साहचर्य सिद्धान्त की त्रुटियों को देखते हुए उन्हें दूर करने में हुआ। प्रारम्भ में लेवीन साहचर्य-सिद्धान्त की ओर आकर्षित हुआ था परन्तु बाद में गहन अध्ययन के पश्चात् उसने इसे त्रुटिपूर्ण पाया। उसने यह अनुभव किया कि साहचर्य के आधार पर स्मृति-सम्बन्धी सभी तथ्यों की सन्तोषजनक व्याख्या करना सम्भव नहीं है। उदाहरणार्थ, साहचर्य-सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि किसी वस्तु और उसके नाम में साहचर्य होता है परन्तु सभी वस्तुओं को देखने पर उनके नामों का स्मरण नहीं होता क्योंकि सभी के प्रति उपयुक्त अभिप्रेरण नहीं होता है। इस प्रकार वस्तु के साहचर्य के अतिरिक्त उसके प्रति अभिप्रेरण (Motivation) का भी स्मृति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। चूँकि अभिप्रेरण पर साहचर्य सिद्धान्त ध्यान नहीं देता, अतः त्रुटिपूर्ण है।

गैस्टाल्ट की आलोचना—लेवीन ने गैस्टाल्ट को भी अपूर्ण माना है। उसके अनुसार मनोविज्ञान के सभी तथ्यों का निरुपण गैस्टाल्ट नियम के अन्तर्गत नहीं किया जा सकता। गैस्टाल्ट के नियम मानव व्यवहार तथा उसके मनोवैज्ञानिक पक्षों की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं कर पाते और इस प्रकार गैस्टाल्ट की धारणा अपूर्ण है। साहचर्य और गैस्टाल्ट में इन त्रुटियों को पाने के पश्चात् ही लेवीन ने क्षेत्र-सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

क्षेत्र-सिद्धान्त की व्याख्या—क्षेत्र-सिद्धान्त की व्याख्या करने से पूर्व यह जानना भी आवश्यक है कि 'क्षेत्र' का तात्पर्य क्या है। क्षेत्र वह 'जीवन स्थान' (Life space) है जिसमें व्यक्ति और उसका मनोवैज्ञानिक पर्यावरण पाया जाता है। इस प्रकार क्षेत्र-सिद्धान्त व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक अध्ययन को उसके जीवन की पर्यावरण की सीमा में करने पर बल देता है। इसके अनुसार मानव व्यवहार के अध्ययन में उसके मनोवैज्ञानिक पक्ष पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाना चाहिये क्योंकि मनुष्य की प्रत्येक क्रिया किसी लक्ष्यपूर्ति का प्रयास होती है और यह लक्ष्य उसके जीवन स्थान के क्षेत्र में पाया जाता है। अतः यह आवश्यक है कि मनोविज्ञान के अध्ययन के लिये व्यक्ति के जीवन स्थान के क्षेत्र की सीमा निश्चित कर ली जाये और फिर यह जाना जाये कि व्यक्ति के वे लक्ष्य तथा उद्देश्य कौन-से हैं जिनकी प्राप्ति के लिये वह

Scanned with CamScanner

क्रियायें करता है अर्थात् जिसके लिये वह अभिप्रेरित होता है। इस तथ्य के स्पष्टीकरण के लिये लेवीन ने एक बालक का उदाहरण दिया है जो कि किसी खेल में सम्मिलित होना चाहता है। वह अपने अभिभावक (Guardian) से आज्ञा लेने जाता है और उसे आज्ञा नहीं मिलती है। इस बात को 'क्षेत्र-सिद्धान्त' के आधार पर इस प्रकार कहा जा सकता है। बालक के मन में खेल की इच्छा उत्पन्न होना क्षेत्र का एक आवश्यक तथ्य है। दूसरा आवश्यक तथ्य खेल में सम्मिलित होना है और इसे लक्ष्य कहा जा सकता है। बालक और लक्ष्य के मध्य अभिभावक की आज्ञा न देना अवरोध के रूप में उपस्थित है।

दिवास्वप्न - जब व्यक्ति की इच्छा पूर्ण नहीं होती तब वह दिवास्वप्न देखने लग जाता है। दिवास्वप्न व्यक्ति के द्वारा कल्पना में खींचे गये चित्र होते हैं। पीछे के दिये गये बालक के उदाहरण को ही लीजिये। जब बालक को खेल में सम्मिलित होने की आज्ञा नहीं मिलती तब वह अपनी कल्पना में ही खेलने में लीन हो जाता था।

क्षेत्र-सिद्धान्त की कर्षण-शक्ति (Vailence), दिष्ट (Vector) तथा अवरोध (Barrier) के आधार पर व्याख्या की गई है। व्यक्ति का व्यवहार क्षेत्र वह क्षेत्र है जिसे वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आवश्यक समझता है। इसे लेवीन ने मनोवैज्ञानिक पर्यावरण कहा है। इस मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में अनेक वस्तुयें होती हैं जिनमें कि कर्षण शक्ति (Vailence) होती है। जिस वस्तु की ओर व्यक्ति आकर्षित होता है उसमें धन (Positive) कर्षण शक्ति होती है और इसी प्रकार जो वस्तुयें व्यक्ति को आकर्षित नहीं करती उनमें ऋण (Negative) कर्षण शक्ति होती है। अतः जिन वस्तुओं की सहायता से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति या लक्ष्य तक पहुँचता है उनमें धनात्मक कर्षण शक्ति होती है। दिष्ट (Vector) उस गति को कहते हैं जो कि व्यक्ति को अपेक्षित दिशा की ओर ले जाती है। इस दिष्ट में कई बार अवरोध पाया जाता है जो कि व्यक्ति को अपेक्षित दिशा की ओर जाने से रोकता है। इस प्रकार दृष्टि अवरोध के कारण अपूर्ण रह जाती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति में हताशा (Frustration) उत्पन्न हो जाती है और इस हताशा के कारण वह अन्य उपायों को प्रयोगों में लाना चाहता है।

बालकों पर हताशा का क्या प्रभाव पड़ता है यह जानने के लिये लेवीन ने बार्कर (Barker) और डिम्बो (Dembo) के सहयोग से एक प्रयोग किया। एक बालक को पहले खेलने के लिये सामान्य प्रकार के खिलौने दिये गये। उसके बाद उसे अच्छे और उसकी पसन्द के खिलौने दिये गये। तत्पश्चात् उससे अच्छे खिलौने ले लिये और फिर पुराने खिलौने उसे दे दिये गये तथा अच्छे खिलौनों को उसके सामने ही एक जालीदार दीवार की दूसरी ओर रख दिया गया। ऐसा करने पर बालक के मन में हताशा उत्पन्न हुई और उसके व्यवहार में तत्काल ही परिवर्तन आ गया

Scanned with CamScanner

जिसे फ्रॉयड के अनुसार प्रतिगमन (Regression) कहते हैं। लेवीन के प्रयोगों ने यह सिद्ध किया कि प्रतिगमन में भिन्नीकरण (Differentiation) की हानि होती है। भिन्नीकरण से तात्पर्य यह था कि बालक का ज्यों-ज्यों विकास होता है त्यों-त्यों उसे अपने पर्यावरण की विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान भिन्नीकरण के आधार पर होने लगता है। परन्तु जब हताशा उत्पन्न होती है तो मानसिक भिन्नीकरण में ह्रास होता है और व्यक्ति प्रतिगमन करके जीवन के उस काल में पहुँचता है जब वह प्रत्येक रूप से सन्तुष्ट होता है।

मानसिक तनाव—यह तो पीछे बताया ही जा चुका कि अवरोध व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति से वंचित करता है और इस प्रकार व्यक्ति के मन में एक प्रकार का मानसिक तनाव (Mental Tension) उत्पन्न हो जाता है। लेवीन के इस तथ्य को उसके सहायक जाइगरनिक (Zeigarnick) ने प्रयोग द्वारा सिद्ध किया। उसने प्रयोग के लिये 200 प्रौढ़ तथा बालक चुने और इन्हें 18 से लेकर 22 तक सरल कार्य दिये गये। ये कार्य ऐसे थे जिन्हें कि सभी सुगमतापूर्वक कर सकते थे। उदाहरणार्थ एक कार्य ऐसा था जिसमें कि उन नगरों के नाम लिखने थे जिनका पहला अक्ष L हो। लगभग आधे व्यक्तियों को प्रयोगकर्त्ता ने कार्यों को पूरा करने से रोका। शेष व्यक्तियों ने कार्य पूरे कर लिये। इसके पश्चात् प्रयोज्य व्यक्तियों को उन कार्यों की सूची बनाने के लिये कहा गया जो कि उन्हें करने के लिये दिये गये थे। व्यक्तियों ने जो सूचियाँ बनाई उनमें अधिकतर उन कार्यों का नाम था जिन्हें कि वे पूरा कर पाये थे। इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि अपूर्ण कार्य मानसिक तनाव उत्पन्न करता है और इसी कारण से वह स्मृति में बना रहता है। जाइगरनिक ने गणित के आधार पर इसी प्रयोग की व्याख्या की और यह बतलाया कि अधूरे कार्य स्मृति में अधिक देर तक रहते हैं। इस तथ्य को अधिक स्पष्ट करने के लिये उसने कुछ और भी प्रयोग किये। उसने बतलाया कि जो कार्य पूरा हो जाता है उसके द्वारा समग्र (Gestalt) बनता है। दूसरी ओर जो कार्य अपूर्ण रह जाता है उसमें समग्रता का अभाव पाया जाता है। अतः गैस्टाल्ट के बनने पर मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।

आकांक्षा-स्तर—क्षेत्र-सिद्धान्त के आधार पर लेवीन तथा उसके कुछ सहयोगियों ने आकांक्षा स्तर (Aspiration Level) पर भी प्रभाव डाला। फ्रैंक (Frank) ने एक निबन्ध में लिखा कि आकांक्षा स्तर वैयक्तिक भिन्नता से होता है। कोई व्यक्ति अपनी भावी क्षमता के विषय में क्या विचार रखता है। इसका ज्ञान उसके आकांक्षा-स्तर को बतलाता है। यदि व्यक्ति की आकांक्षा तथा उसकी वास्तविक कार्यक्षमता में अन्तर का अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि इस अन्तर का सम्बन्ध व्यक्तित्व से होता है।

क्षेत्र-सिद्धान्त और सामाजिक मनोविज्ञान—लेवीन ने बाल मनोविज्ञान का विशेष अध्ययन किया और इसके अन्तर्गत उसने बहुत से महत्वपूर्ण प्रयोग किये। ये

Scanned with CamScanner

प्रयोग क्षेत्र सिद्धान्त पर आधारित हैं और सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत आते है। उसने एक अत्यन्त प्रसिद्ध प्रयोग लिपिट (Lippitt) और व्हाइट (White) के सहयोग से किया। इसमें वह जानना चाहता था कि जिन बालकों को एकतन्त्रीय, जनतन्त्रीय तथा हस्तक्षेप न करने वाले नेतृत्व की शिक्षा दी गई है। वे किस प्रकार अपना सामाजिक पर्यावरण निर्मित करते हैं। इन तीनों प्रकार के नेतृत्व में पाँच-पाँच बालकों का समूह था। बालकों को मुखावरण (Mask) बनाने का कार्य दिया गया और इनकी देख-रेख के लिये प्रत्येक समूह के लिये एक-एक नेता चुना गया। समूह की कार्य-प्रणाली का विस्तृत विवरण रखा गया। इस प्रकार यह ज्ञात हुआ कि एकतन्त्रीय नेतृत्व पाने वाले बालकों की अभिवृत्ति कालान्तर में एकतन्त्रीय हो गयी। अतः इस प्रयोग द्वारा यह सिद्ध हुआ कि जैसा नेता होता है उसका प्रभाव उसके अनुयायियों पर अवश्य पड़ता है। यह प्रयोग सामाजिक मनोविज्ञान के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार लेवीन का क्षेत्र-सिद्धान्त मनोविज्ञान के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह गैस्टाल्ट सम्प्रदाय के अन्तर्गत ही आता है परन्तु यह गैस्टाल्ट की त्रुटियों को दूर करने के लिये किया गया था और इसके आधार पर बाल मनोविज्ञान तथा सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण तथ्यों का प्रतिपादन किया गया।

Scanned with CamScanner